International Journal of Sanskrit Research 2022; 8(6): 172-173

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(6): 172-173
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 23-09-2022
Accepted: 27-10-2022

डॉ. निशा गोयल
एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, कालिन्दी महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
डॉ. निशा गोयल
एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, कालिन्दी महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

ब्रह्मचारी के आगमन का महत्त्व

डॉ. निशा गोयल

सारांश:
भास संस्कृत साहित्य के प्रथम नाटककार हैं। इनके द्वारा रचित 13 नाटकों में से स्वप्नवासवदत्तम् को सर्वोत्कृष्ट माना जाता है। भास ने इस नाटक में सरल, सरस और प्रसादगुणयुक्त भाषा का प्रयोग किया है। इसके अन्तर्गत अलंकारों का अत्यन्तस्वाभाविक रूप से प्रयोग किया है। भास उच्चकोटि के मनोवैज्ञानिक कवि माने जाते हैं। उन्होंने स्वप्नवासवदत्तम् के प्रथम अंक में प्रत्येक पात्र के मन को समझकर उसके अनुरूप हीं वर्णन किया है। यथा- जब यौगन्धरायण और वासवदत्ता अपनी योजना के अनुसार लावाणक गाँव से निकलकर मगध देश के तपोवन में प्रवेश करते हैं, और उन्हें उनके निकलने के बाद की घटना का पता नहीं होता है, तब उनकी उसी जिज्ञासा की शान्ति के लिए प्रथम अंक में ब्रह्मचारी का आगमन करवाया गया है जो लावाणक गाँव से ही अपनी शिक्षा को अधूरी छोड़कर आया है और लावाणक गाँव में बीती प्रत्येक घटना की जानकारी देता है।

कूटशब्द : भास, स्वप्नवासवदत्तम्, लावाणक गाँव, ब्रह्मचारी

प्रस्तावना
भास ने स्वप्नवासवदत्तम् के प्रथम अंक में आश्रम में ब्रह्मचारी का प्रवेश उस समय कराया है जब वहाँ पद्मावती, कञ्चुकी, यौगन्धरायण और वासवदत्ता आदि उपस्थित थे, अत: ऐसे समय में ब्रह्मचारी के आने से प्रथम अंक का महत्व और अधिक बढ़ जाता है।

ब्रह्मचारी: ब्रह्म ज्ञानं तपो वा अवश्यमाचरति अर्जयति इति ब्रह्मचारी। ब्रह्मचारी शब्द (ब्रह्म +/चर + णिनि) ब्रह्म उपपद पूर्वक चर धातु से णिनि प्रत्यय लगकर बना है जिसका अर्थ है- जीवन के प्रथम आश्रम में वर्तमान ब्राह्मण, जो यज्ञोपवीत धारण करने के पश्चात् दीक्षित होकर गुरुकुल में अपने गुरु के साथ रहता है और वेदाध्ययन के समय ब्रह्मचर्याश्रम के नियमों का पालन करता रहता है जब तक कि वह गृहस्थाश्रम में प्रविष्ट नहीं हो जाता।

ब्रह्मचारी द्वारा तपोवन का वर्णन: ब्रह्मचारी लावाणक ग्राम से अपनी शिक्षा अधूरी छोड़कर अपने घर वापिस जा रहा था। मार्ग में उसे थकावट का आभास होता है, इसके साथ ही दोपहर का समय भी है तो वह थोडा विश्राम करना चाहता है तो उसे उस प्रदेश को देखकर ऐसा आभास होता है कि समीप में ही तपोवन होगा। जैसे - वहाँ हरिण बिना किसी भय के निश्शंक विचरण कर रहे थे, वहाँ के वृक्ष फल और फूलों से

समृद्ध थे, वहाँ अनेक कपिला गायें चर रहीं थीं, वहाँ का प्रदेश खेती से रहित था तथा अनेक सुगन्धि वाला धुंआ सर्वत्र फैल रहा था –

विस्रब्धं हरिणाश्चरन्त्यचकिता देशागतप्रत्यया
वृक्षाः पुष्पफलैः समृद्धविटपा: सर्वे दयारक्षिताः ।
भूयिष्ठं कपिलानि गोकुलधनान्यक्षेत्रवत्यो दिशो
निःसन्दिग्धमिदं तपोवनमयं धूमो हि बह्वाश्रयः ।।[1]

ब्रह्मचारी द्वारा वासवदत्ता के प्रति उदयन का प्रेम-वर्णन - यौगन्धरायण द्वारा ब्रहमचारी से अपनी शिक्षा पूर्ण किये बिना अपने घर वापिस लौटने का कारण पूछने पर वह बताता है
कि- लावाणक गाँव मे आग लग जाने से राजा उदयन की प्रिय पत्नी वासवदत्ता जलकर मर गई जिसको बचाते हुए उसका मन्त्री यौगन्धरायण भी मर गया। उन दोनो के वियोग से राजा दुःखी हो गया और उसी आग में अपने प्राणों की आहुति देने की इच्छा वाले राजा को अन्य मन्त्रियों ने प्रयत्नपूर्वक रोक लिया परन्तु वासवदत्ता के जलने से बचे हुए आभूषणों को छाती से लगाकर राजा मूर्च्छित हो गया तत्पश्चात् धीरे-धीरे राजा होश में आया। यह सुनकर पद्मावती को थोड़ा सन्तोष मिला और उसके मन में राजा के प्रति प्रेम का बीज अंकुरित हो गया।
राजा के इस प्रकार के प्रेम को देखकर ब्रहमचारी राजा के प्रेम की प्रशंसा और वासवदत्ता के सौभाग्यशाली होने की वर्णन करता है –

नैवेदानीं तादृशाशचक्रवाका
नैवाप्यन्ये स्त्रीविशेषैर्वियुक्ता: ।
धन्या सा स्त्री या तथा वेति भर्ता,
भर्तृस्नेहात् सा हि दग्धाप्यदग्धा ॥[2]

ब्राह्मचारी द्वारा राजा के ऐसे प्रेम का वर्णन सुनने पर तापसी भी राजा की प्रशंसा करते हुए कहती है -

"स खलु गुणवान् नाम राजा, य आगन्तुकेनाप्यननैवं प्रशस्यते"[3]

अर्थात् वास्तव में वह राजा अत्यन्त गुणवान् है जिसकी यह आगंतुक भी इस प्रकार प्रशंसा कर रहा है।

ब्राह्मचारी द्वारा राजा की विरह व्यथा के साथ ही रुमण्वान की स्वामिभक्ति का वर्णन:-
जब राजा वासवदत्ता के वियोग मे विलाप कर रहा था तो यौगन्धरायण के यह पूछने पर कि क्या किसी मन्त्री ने उन्हें सामान्य अवस्था में लाने का प्रयत्न नहीं किया, ब्रह्मचारी रुमण्वान की राजा के प्रति अनन्य भक्ति की प्रशंसा करते हुए कहता है-

अनाहारे तुल्य: प्रततरुदितक्षामवदन:
शरीरे संस्कार नृपतिसमदुःखं परिवहन ।
दिवा वा रात्रौ वा परिचरति यत्नैर्नरपति
नृप: प्राणान् सद्यस्त्यजति यदि तस्याप्युपरमः॥[4]

अर्थात् राजा की ही भांति भोजन छोड़े हुए है और निरन्तर रोने से राजा के ही समान उसका मुख भी मलिन रहता है। राजा के समान दुःख का अनुभव करता हुआ वह भी शरीर-शुद्धि के लिए स्नानादि आवश्यक क्रियाएँ जैसे-तैसे कष्टपूर्वक सम्पन्न करता है। दिन हो या रात, वह निरन्तर प्रयत्नपूर्वक राजा की सेवा कर रहा है। अधिक क्या यदि राजा शीघ्र ही प्राणों का त्याग करे तो उसका मरण भी निश्चित है।
यौगन्धरायण भी ब्रह्मचारी की बात सुनकर मन ही मन रुमण्वान की भक्ति की प्रशंसा करता है।

उपसंहार - इस प्रकार नाटककार भास ने ब्रहमचारी के द्वारा निम्न सूचनाएँ देकर उसका महत्त्व प्रतिपादित किया है:-

- उस समय के तपोवन का वर्णन ।
- वासवदत्ता के प्रति राजा उदयन के अनन्य प्रेम का वर्णन ।
- राजा उदयन के प्रति पदमावती के मन मे प्रेम का अंकुर पल्लवित होना ।
- तापसी के द्वारा राजा उदयन की प्रशंसा ।
- राजा उदयन की विरह-वस्था का वर्णन ।
- रुमण्वान् की अनन्य भक्ति का वर्णन ।

सन्दर्भ

1. स्वप्नवासवदत्तम्, प्रथम अंक, श्लोक 12
2. वही, श्लोक 13
3. वही, पृष्ठ 30
4. वही, श्लोक 14
5. स्वप्नवासवदत्तम्, डॉ. गणेशदत्त शर्मा, मेरठ: साहित्य भंडार
6. स्वप्नवासवदत्तम्, डॉ. राकेश शास्त्री, दिल्ली : चौखम्भा ओरियन्टालिया